पाठ 21

तरह-तरह के घर

पवन और सोनम घर बनाने का खेल, खेल रहे थे। उन्होंने दो बड़ी छतरियों को खोल रखा था। पवन उन छतरियों को एक पुरानी चादर से ढँकने की कोशिश कर रहा था। सोनम दोनों छतरियों को पकड़े हुए उनके बीच बैठी थी। जब उसे लगा कि उसका घर बन गया है तो उसने छतरियों से अपने हाथ हटा लिए। लेकिन ये क्या! अचानक सब कुछ हिला और ढेर हो गया। छतरियाँ और चादर, दोनों सोनम के ऊपर गिर पड़े।

पवन ने पूछा, ''सोनम, तुम्हें चोट तो नहीं लगी?''

सोनम ने कहा, ''नहीं, लेकिन पवन, हमें इससे मज़बूत घर की ज़रूरत है।''

''तुम सही कह रही हो सोनम,'' पवन ने कहा ''इतना बड़ा घर जिसमें हम दोनों आराम से बैठ सकें और जो न गिरे।'' तभी दादाजी आकर उनके पास बैठ गए और बोले, ''लोग तरह–तरह के घर बनाते हैं। उनका घर मज़बूत रहे इसका भी वे पूरा ध्यान रखते हैं।''

1. आपके आस–पास किस–किस तरह के घर हैं? (✓) का निशान लगाकर बताइए–

   (i) मिट्टी और पत्थर के बने घर

   (ii) ईंट और सीमेंट के बने कच्ची छतवाले घर

   (iii) ईंट और सीमेंट के बने पक्की छतवाले घर

   (iv) घास–फूस के बने घर

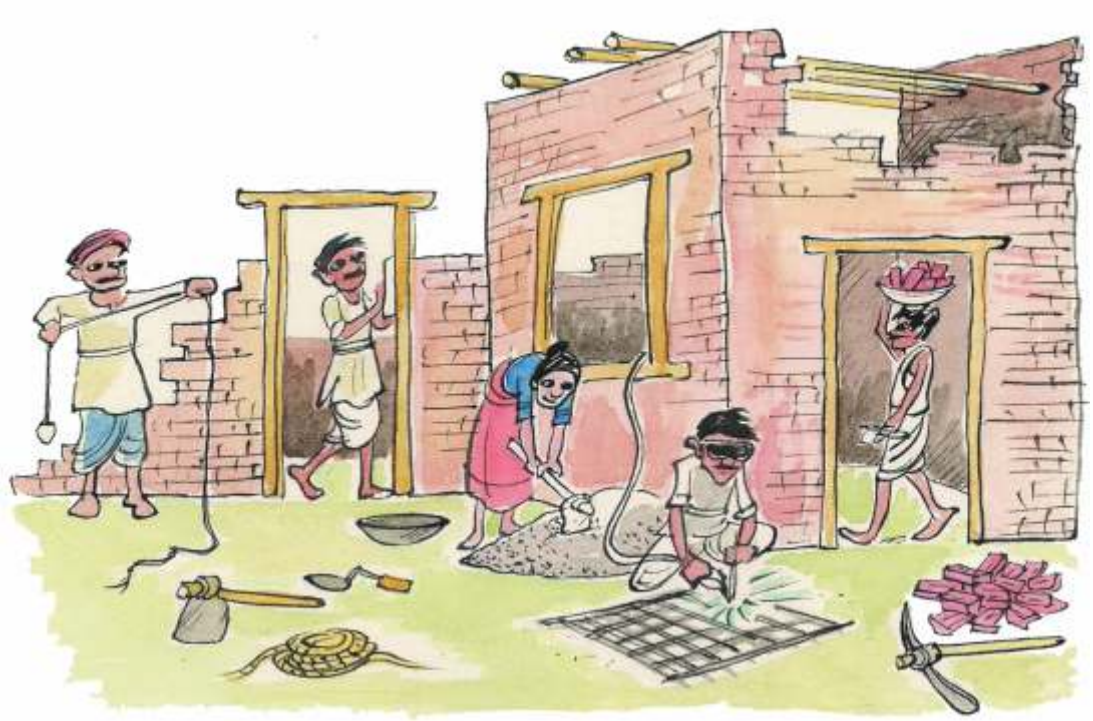

2. इन घरों को बनाने के लिए कौन–कौन सी सामग्री की ज़रूरत पड़ती है?

_____

_____

_____

3. (i) घर बनाने में किन–किन लोगों की मदद की ज़रूरत होती है?

_____

_____

(ii) घर बनाने में कौन–कौन से औज़ार काम आते हैं?

_____

_____

4. घर को मज़बूत बनाने के लिए क्या–क्या किया जाता है?

_____

_____

_____

सोनम दादाजी से बोली, ''क्या आपके समय भी अभी की तरह के घर होते थे?''

दादाजी ने बताया, ''हमारे समय में आज की तरह पक्के घर कम देखने को मिलते थे। बहुमंज़िला इमारतें तो होती ही नहीं थीं। हमारे समय में मिट्टी और खपरैल के घर होते थे।''

पवन बोला, ''अरे हाँ! मैं जब गर्मी की छुट्टियों में चाचाजी के पास पटना गया था तो बहुत सारी बहुमंज़िला इमारतें देखीं। दादाजी ने बताया कि ऐसी बहुमंज़िला इमारतें जिनमें लोग रहते हैं, उन्हें 'अपार्टमेन्ट' कहा जाता है। ऐसी बहुमंज़िला इमारतों के अंदर दो–तीन कमरों के कई छोटे–छोटे घर होते हैं।''

तभी पवन बोला, ''चाचाजी चौथे तल्ले के फ्लैट में रहते हैं। यह घर मुझे ज़रा भी पसंद नहीं आता। छत पर जाना मुश्किल और खेलने को भी कोई जगह नहीं।

सोनम बोली, ''शहरों में इस प्रकार की बहुमंज़िला इमारतें बनाने की आवश्यकता क्यों पड़ती है?''

5. **आप भी सोचिए और लिखिए।**

_____

_____

_____

_____

_____

दादाजी ने बताया कि विभिन्न जगहों पर बनाए जानेवाले घर वहाँ के मौसम और वहाँ उपलब्ध सामग्री के अनुरूप होते हैं। उन्होंने एक किताब में जगह–जगह मिलनेवाले घरों के चित्र दिखाए। सोनम ने पूछा, ''दादाजी, ऐसे घर कहाँ–कहाँ मिलते हैं?

6. **आप भी अपने शिक्षक से पता कर लिखिए।**

_____

_____

बर्फीले प्रदेशों में जहाँ चारों ओर बर्फ–ही–बर्फ होती है न पत्थर न ही ईंट और न ही मिट्टी। यहाँ बर्फ की सिल्लियों के घर बनाए जाते हैं। इन घरों को ''इग्लू'' कहते हैं। इन घरों की दीवारें अंदर से छूने पर ठंडी तो लगती हैं, पर वे बाहर गिरती बर्फ और ठंडी हवा को अंदर नहीं आने देती हैं।

करके देखिए

आप भी अपना मिट्टी का घरौंदा बना सकते हैं। इसके लिए आप नीचे लिखी सामग्री इकट्ठा कीजिए और दिए गए निर्देशों के अनुसार करते जाइए।

आओ, ईंट बनाएँ

आपको जरूरत होगी– दियासलाई के दो खाली डिब्बे, मिट्टी, ज़मीन पर बिछाने के लिए अखबार, मग, पानी और बाल्टी।

मिट्टी में पानी मिलाकर सानिए। सानने पर मिट्टी ऐसी हो कि आप उसे हाथ में रखकर आकार दे सकें। अब नीचे चित्रानुसार दियासलाई के डिब्बे में मिट्टी भरकर ईंट बना लीजिए।

ऐसी कम–से–कम 10–15 ईंटें बना लीजिए। अब इन ईंटों को धूप में सूखने दीजिए।

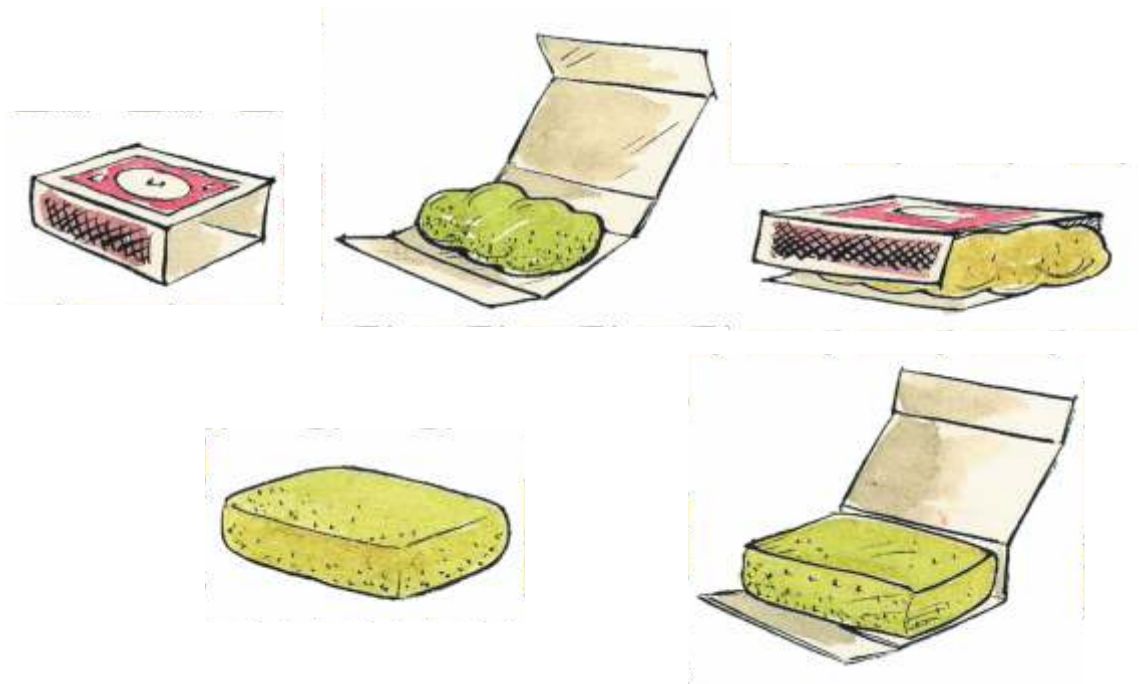

7. आप किसी ईंट के भट्ठे पर जाइए और पता लगाइए–

(i) ईंट बनाने के लिए किस तरह की मिट्टी की ज़रूरत होती है?

_____

(ii) लोग ईंट कैसे बनाते हैं?

_____

_____

_____

(iii) ईंट को मज़बूत बनाने के लिए क्या–क्या करते हैं?

_____

_____

आओ दीवार बनाएँ

अपनी और अपने दोस्तों द्वारा बनाई गई सभी ईंटें इकट्ठा कीजिए। उन्हें जोड़–जोड़कर एक दीवार बनाइए। किस तरह ईंट जोड़ने से दीवार ज़्यादा मज़बूत होगी।

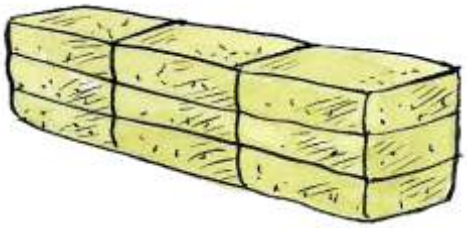

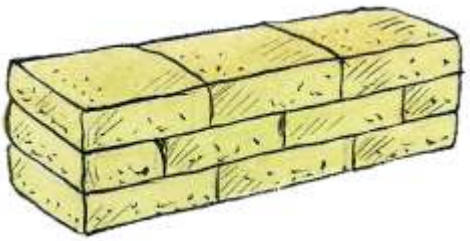

8. किसी मिस्त्री के पास जाकर पता कीजिए कि जब वो दीवार बनाता है तो उसकी मज़बूती के लिए वह क्या–क्या करता है?

_____

_____

अपना घरौंदा बनाइए

ऊपर आपने एक दीवार बनाई है। इसी तरह अपने घरौंदे की अन्य दीवारें भी बनाइए। घरौंदे में खिड़की दरवाज़ा रखना मत भूलिएगा। अब अपने घर की छत बनाने की कोई तरकीब ढूँढिए।